विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८२

नित नवल
कैलाश कुमार मिश्र

पाँच कृतिक साहित्यिक आ
स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

साहित्यिक, सामाजिक, आख्यानशास्त्रीय
आ सम्पादकीय समीक्षा

LXXXII

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८२ • LXXXII

नित नवल कैलाश कुमार मिश्र

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८२ · **LXXXII**

नित नवल कैलाश कुमार मिश्र

पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

साहित्यिक, सामाजिक, आख्यानशास्त्रीय आ स्रोत-समीक्षात्मक आलोचना

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–८२ · LXXXII

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल कैलाश कुमार मिश्र

उपशीर्षक : पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

पाठाधार : उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त “नित नवल कैलाश कुमार मिश्र”क सम्पादित DOCX; ११६ पृष्ठक मूल पुस्तक।

समीक्षाक आधार आ सीमा

एहि समीक्षा द्वारा मूल पुस्तकमे प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुरक पाँच साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययनक आलोचनात्मक पुनर्पाठ कएल गेल अछि। डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक मूल पाँच कृतिक स्वतंत्र पूर्ण पाठ प्रस्तुत पाण्डुलिपिमे संलग्न नहि अछि; ताहि कारण विशिष्ट कथनक विवेचना उपलब्ध अध्ययनक मार्फत कएल गेल अछि।

मूल कृतिक लोककथा, ऐतिहासिक प्रसंग, विधिक/चिकित्सकीय अथवा संस्थागत दावाकेँ समीक्षा अपनहि स्वतंत्र सत्यापन मानि नहि लैत। मूल पाठक कथन, ठाकुरक निष्कर्ष आ एतयक सम्पादकीय विश्लेषणक बीच आवश्यक भेद राखल गेल अछि। बाहरी तथ्य-निश्चय लेल मूल अभिलेख देखब जरूरी रहत।

मूल पुस्तकक पृष्ठ १३–११५ एहि समीक्षाक संदर्भ छथि। एहि खण्डक अनुक्रममे देल पृष्ठ-संख्या अन्तिम समीक्षात्मक PDF क अछि।

विस्तृत अनुक्रम

अन्तिम PDF क पृष्ठ-संख्याक संग मिलाओल अनुक्रम; मूल अध्ययनक पृष्ठ-संख्या अलग अछि।

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक आधार....6

१. 'नित नवल कैलाश कुमार मिश्र' : एक ग्रन्थमे पाँच पाठ-द्वार....6

२. समीक्षा पर समीक्षा : आलोचकक दोगुना उत्तरदायित्व....7

३. साहित्यिक विवेक, स्रोत-समीक्षा आ सौन्दर्यक त्रिकोण....7

द्वितीय विभाग : पाँच अध्ययनक क्रमिक पाठ....9

४. 'अरेड़' : स्मृतिक पाठसँ स्रोतक परीक्षा धरि....9

५. अरेड़क व्यक्ति-चरित : नायकक चयन आ लोकक अदृश्य इतिहास....10

६. अरेड़क तथ्यगत अन्तर : त्रुटि-सूची नहि, सत्यापन-कार्यसूची....10

७. 'बुकमेनिया' : पुस्तकप्रेम आ कठोर आलोचनाक संग्राम....11

८. बुकमेनियाक समालोचनात्मक सार्वजनिकता आ प्रतिक्रिया....12

९. 'मनसरबी' : कर्मफलक विधान आ बुलकीक अनुत्तरित दुःख....13

१०. मनसरबीक प्रेम, भूमि, जाति आ प्रतिरोध....14

११. 'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना' : यात्रा, चित्रकला आ लोकसृजन....14

१२. 'प्रबन्ध'क शिल्प : 'हम'क बहुवचन आ क्षेत्रक प्रश्न....15

१३. 'विदेह सदेह २९' : एक संग्रहक अनेक भाषिक देह....16

१४. लोकगीत, स्त्रीक अनुभव आ परम्पराक भीतर प्रतिवाद....17

तृतीय विभाग : पाँच पाठक बीच चलैत साझा सूत्र....19

१५. 'लोक' : जनजीवन कि चयनित स्मृतिक नाम?....19

१६. स्त्रीक आवाज : उपस्थित पात्रसँ व्याख्याक अधिकार धरि....19

१७. जाति, वर्ग, अर्थव्यवस्था : सहचर प्रश्न, एक अर्थ नहि....20

१८. भूमि, स्थलनाम आ भाव-भूगोल....21

१९. साहित्यिक आलोचनामे दृश्य, वस्तु आ अनकहल संकेत....22

चतुर्थ विभाग : आख्यानशास्त्रीय आ प्रमाण-विवेकक समीक्षा....................................23

२०. वाचक : आत्मीय ‘हम’, सर्वज्ञ दृष्टि आ आलोचकक तेसर स्वर..........................23

२१. कथाकाल आ दस्तावेजक समय..23

२२. उद्धरण, श्रेय आ स्रोतक वर्गीकरण..24

२३. ऐतिहासिक सत्यापनक सीमा आ सावधान भाषा..25

२४. भाषिक रूप, वर्तनी आ लोकबोलीक मर्यादा..26

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय..27

२५. पाँचो अध्ययनक प्रमुख उपलब्धि..27

२६. प्रमुख सीमासभ : विस्तार, अनुपात आ विश्लेषणक घनत्व..............................27

२७. प्रस्तावित परिष्कार : संशोधित आलोचना-संस्करणक कार्यसूची.....................28

२८. आलोचनात्मक निर्णय : महत्त्व, अपूर्णता आ सम्भावना...................................29

षष्ठ विभाग : पाँच कृतिक सार-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न...31

२९. अध्ययन-पत्र : ‘अरेड़ : गामक लोक इतिहास’...31

३०. अध्ययन-पत्र : ‘बुकमेनिया’...31

३१. अध्ययन-पत्र : ‘मनसरबी’..32

३२. अध्ययन-पत्र : ‘विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना’.................................32

३३. अध्ययन-पत्र : ‘विदेह सदेह २९’...33

३४. अन्तिम सम्पादकीय निवेदन...33

पाठाधार आ सन्दर्भ..34

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक आधार

१. 'नित नवल कैलाश कुमार मिश्र' : एक ग्रन्थमे पाँच पाठ-द्वार

'नित नवल कैलाश कुमार मिश्र'क शीर्षक व्यक्तिक नामक संग पुनर्पाठक वचन सेहो दैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि संग्रहमे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक पाँच कृतिक पृथक् अध्ययन रखैत छथि—'अरेड़ : गामक लोक इतिहास', 'बुकमेनिया', 'मनसरबी', 'विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना' आ 'विदेह सदेह २९'मे संकलित रचना। ताहि कारण ई पुस्तक एक विषयपर बनल एकरेखीय शोधप्रबन्ध नहि, पाँच विधागत प्रवेशद्वारसँ लेखकक रचनात्मक चेतनाकेँ पढ़बाक प्रस्ताव अछि। ग्रामस्मृति, आलोचना, उपन्यास, यात्रा-वृत्तान्त, लोकगीत आ कथासाहित्य एके समालोचनात्मक भूगोलमे आबि जाइत अछि।

एतय समीक्षकक पहिल जिम्मेवारी दू स्तर अलग राखब अछि। एक स्तर डॉ. मिश्रक मूल कृति, जिनकर वाक्य आ दृश्य ई संग्रह प्रस्तुत करैत अछि; दोसर स्तर गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षा, जे ओहि कृतिसभक अर्थ, सीमा आ प्रमाणपर अपन निर्णय रखैत छथि। एहि खण्डक विषय मुख्यतः दोसर स्तर अछि। उदाहरणार्थ 'अरेड़'क इतिहासक प्रत्येक दावाक सत्यापन एहि समीक्षाक स्वतंत्र उद्देश्य नहि; हमर प्रश्न अछि जे ठाकुर ओहि दावाकेँ प्रमाणक कोन कसौटीपर राखैत छथि। तहिना 'मनसरबी'क कथानकक अन्तिम अर्थक स्थानपर एहि पुस्तकमे निर्मित व्याख्याक तर्क, संवेदना आ अनुत्तरित पक्षक समीक्षा जरूरी अछि।

पाँचो खण्डक पृष्ठ-विस्तार एक समान नहि। उपलब्ध सम्पादित पाण्डुलिपिमे पहिल अध्ययन पृष्ठ १३ सँ ३६ धरि, दोसर ३७ सँ ५९ धरि, तेसर ६० सँ ७९ धरि, चारिम ८० सँ ९७ धरि आ पाँचम ९८ सँ ११५ धरि पसरल अछि। एहि क्रममे ग्राम-इतिहाससँ आरम्भ भेल आलोचना पुस्तक-समीक्षा, उपन्यास आ सांस्कृतिक मानवशास्त्र दिस बढ़ैत अछि। पाठक लेल प्रश्न ई अछि जे ई यात्रा अनेक वस्तुक जमघट मात्र अछि वा एक स्थायी बौद्धिक पद्धतिक विकास? प्रस्तुत समीक्षाक मुख्य कसौटी एही प्रश्नसँ निकलैत अछि।

२. समीक्षा पर समीक्षा : आलोचकक दोगुना उत्तरदायित्व

एक कृतिक आलोचना करब आ ओकर आलोचनाक आलोचना करबमे अन्तर अछि। पहिल रूपमे कथानक, शिल्प, पात्र, भाषा आ ऐतिहासिक संदर्भक संग प्रत्यक्ष सम्वाद होइत अछि। दोसर रूपमे आलोचकक चयन स्वयं जाँचक वस्तु बनैत अछि—ओ कोन प्रसंग चुनलनि, कोन प्रश्न छोड़लनि, कोन साक्ष्य महत्त्वपूर्ण मानलनि आ कोन निर्णयक आगाँ 'सम्भवत:' अथवा 'जाँच आवश्यक' लिखलनि? ठाकुरक पुस्तक उल्लेखनीय अछि कारण बहुत ठाम ओ अपन प्रिय लेखकक प्रशंसा करैत-करैत हुनकर असंगति सेहो देखबैत छथि। ई आत्मीयतासँ विवेक दिस गमनक चिन्ह अछि।

तथापि समीक्षाक प्रमाण आ मूल पुस्तकक प्रमाणकेँ गड्डमड्ड नहि कएल जा सकैत। उदाहरणक लेल 'अरेड़' खण्डमे फुटबॉल खेलाड़ीक संख्या, विश्वम्भर झाक निधन-वर्ष आ चिकित्सकीय विवरणक परस्पर विरोध गनाओल गेल अछि। ई पुस्तकक भीतरक तुलनात्मक पढ़ाईसँ निकसल सवाल छथि; कोनो एक वैकल्पिक वर्ष वा संख्या स्वत: सिद्ध नहि। ठाकुरक सावधान निर्णय, जखन ओ 'मूल अभिलेखसँ सत्यापन' कहैत छथि, आलोचनात्मक सद्‌गुण अछि। मुदा एहि सद्‌गुणकेँ लगातार कतेक निभाओल गेल, से समग्र अध्ययनमे जाँचबाक चाही।

एहि सम्पादकीय समीक्षामे मौखिक परम्पराकेँ असत्य घोषित करबाक अभिप्राय नहि, आ नहि लिखित दावाकेँ मात्र मुद्रित होयबाक कारण सत्य मानबाक। सांस्कृतिक अर्थ, साहित्यिक सत्य, कथित साक्ष्य, संस्थागत अभिलेख आ आलोचकक मूल्य-निर्णय पाँच भिन्न श्रेणी छथि। एकर अलग-अलग पहचान ग्रन्थक योगदानकेँ बेसी स्पष्ट करैत अछि आ ओकर सीमा-सूचीकेँ न्यायपूर्ण बनबैत अछि।

३. साहित्यिक विवेक, स्रोत-समीक्षा आ सौन्दर्यक त्रिकोण

ग्रन्थक उपशीर्षक 'पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन' अछि। ई परिभाषा स्वयं एक कठिन अनुशासन माँगैत अछि।

साहित्यिक समीक्षामे बिम्ब, कथन-गति, भाषा, पात्रक स्वतन्त्रता आ प्रभावक परीक्षा होयत। स्रोत-समीक्षामे उद्धरणक मूल, कथनक प्रसंग, तारिखक संगति आ विरोधी साक्ष्यक खोज होयत। तेसर अनिवार्य पक्ष सामाजिक नैतिकता अछि—ककर स्वर उपस्थित, ककर श्रम अदृश्य, आ शक्ति कोना अर्थक वितरण करैत अछि। तीनू पक्ष एक-दोसराक विकल्प नहि।

ठाकुर बहुधा एहि तीनू दिशा एक साथ देखबाक प्रयत्न करैत छथि। 'अरेड़'मे रेशमा मौसीक सम्बोधन साहित्यिक दृश्य अछि; समुदाय आ अपनत्वक प्रश्न सामाजिक अर्थ अछि; मौखिक साक्षात्कार आ अभिलेखक कमी स्रोत-प्रश्न अछि। 'बुकमेनिया'मे कविता-भाषा आ स्त्रीविषयक दृष्टि दुनू पढ़ल गेल अछि, मुदा किछु ठाम कथानक-सारक विस्तार शिल्प-परीक्षाक स्थान घटबैत अछि। 'मनसरबी'मे पाजेबक पुरिया एक गहन वस्तु-बिम्ब बनैत अछि; ओहि प्रसंगसँ वर्ग, प्रेम आ अनुत्तरित न्याय जुड़ैत अछि। ई उदाहरण देखबैत अछि जे ग्रन्थक श्रेष्ठ पठन बहुविध प्रश्नकेँ एके दृश्य पर केन्द्रित करैत अछि।

सीमा एतय सुरु होइत अछि जतय नैतिक रूपसँ उचित वक्तव्य साहित्यिक निष्कर्षक प्रमाण मानि लेल जाइत अछि। कोनो पात्रक दुःख महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कथाकार ओहि दुःखकेँ कोन वाचक, काल, संवाद, मौन आ दृश्य-क्रमसँ अनुभव बनबैत छथि—एहि प्रश्नक उत्तर अलग चाही। एहि खण्डमे हम सामाजिक संवेदना आ आख्यान-विश्लेषणक अन्तर राखि गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक हस्तक्षेपक मूल्यांकन करैत छी।

द्वितीय विभाग : पाँच अध्ययनक क्रमिक पाठ

४. 'अरेड़' : स्मृतिक पाठसँ स्रोतक परीक्षा धरि

'अरेड़ : गामक लोक इतिहास'पर पहिल अध्ययनक मूल उपलब्धि ई अछि जे ग्रामकथा सँ इतिहासक प्रश्न बनेबाक प्रक्रिया स्वयं देखल गेल अछि। सत्रह अध्यायमे नाम, क्षेत्र, अखाड़ा, विद्यालय, मंदिर, हाट, गृहिणी, स्वतन्त्रता आन्दोलन आ चौपाड़ि आवैत अछि। ठाकुर एहि सूचीकेँ कोनो अपरिच्छिन्न 'गौरवगाथा' नहि मानैत छथि। ओ 'हमर गाम'क आत्मीय वाचककेँ साहित्यिक सामर्थ्यक रूपमे सराहैत छथि, मुदा ओही निकटतासँ पैदा होमयवाला पक्षधरता आ चयनक सीमा सेहो पहचानैत छथि।

रेशमा मौसीक प्रसंगपर हुनकर पठन विशेष ध्यानाकर्षक अछि। एक मुस्लिम तरकारी विक्रेत्रीकेँ माय द्वारा बहिन कहनाइ, बालकक 'मौसी' सम्बोधन आ बजारक लेनदेनक घरेलू आत्मीयतामे बदलनाइ—ई दृश्य बड़का घोषणासँ बेसी प्रभावकारी रूपमे सामाजिक सम्बन्ध रचैत अछि। ठाकुर एतय जाति वा धर्मक सहअस्तित्वक उत्सवी वाक्यपर नहि रुकैत छथि; सम्बन्धक रचनात्मक व्यवहारकेँ देखैत छथि। तथापि मौसीक अपन व्यापार, आय, श्रम-समय आ कष्टक स्वतंत्र कथन अनुपस्थित रहबासँ स्त्रीक सामाजिक व्यक्तित्व पूरा नहि खुलैत। आलोचक ई खाली स्थान आओर निर्दिष्ट कऽ सकैत छलाह।

'अरेड़' अध्ययनमे असमान प्रमाण-स्तरक सुचिन्तित पृथक्करण अछि। बच्चा झाक असाधारण पराक्रम, लक्ष्मीनिया-बखारीक अक्षय धान, साधुक चमत्कार अथवा कालिदासक सम्भावित यात्रा—लोकविश्वासक सांस्कृतिक दस्तावेज छथि, सत्यापित घटनाक अनुक्रम नहि। एहि अन्तरपर जोर दैत ठाकुर लोकगाथाक मान घटबैत नहि, बल्कि ओकरा उचित अध्ययन-वस्तु बनबैत छथि। एहि विधिकेँ मैथिली लोकइतिहासक आलोचनामे अधिक व्यवस्थित रूप देबाक आवश्यकता अछि।

५. अरेड़क व्यक्ति-चरित : नायकक चयन आ लोकक अदृश्य इतिहास

पहिल अध्ययनक कथात्मक शक्तिक केन्द्रीय स्रोत पात्र-चरित छथि। दू बच्चा झाक प्रसंग वीरता आ संस्थान-निर्माणक अलग अर्थ दैत अछि; बुद्धिनाथ झाक गाथामे दान आ दन्तकथा भेटैत अछि; विश्वम्भर झाक शोकक कथा पुस्तकालय आ सार्वजनिक जीवनसँ जुड़ैत अछि। ठाकुर एहि भिन्न पाठ-प्रकृतिसभकेँ एक शब्द 'महापुरुष'मे गाभि नहि दैत छथि। ओ देखबैत छथि जे वीरगाथाक अतिशयोक्ति आ विद्यालयक स्थापना-दस्तावेज एक सरीख प्रमाण नहि, जबकि दुनूक सांस्कृतिक महत्त्व सम्भव अछि।

मायक चरित्र, लेटर बम आ रघु बाबूक प्रसंग एहि इतिहासक सामाजिक विस्तार करैत अछि। 'एहन छलीह माय' आ 'मायक अदम्य साहस'मे शिवदुलारी देवीक दैनिक श्रम आ संकटमे निर्णयक शक्ति घरक इतिहासकेँ सार्वजनिक विषय बनबैत अछि। लेटर मुखिया 'लेटर बम'क सामाजिक गरिमा ग्रामीण श्रम, पहलवानी आ सहयोगसँ तैयार होइत अछि। एहि पात्रसभक माध्यमसँ ठाकुर लोक-इतिहासक प्रमुख रजिस्टर बदलैत छथि—राजकीय पदसँ सेवा, अभिलेखसँ व्यवहार आ पुरुषवीरतासँ स्त्री-श्रम दिस।

मुदा एहि चयनमे एक प्रश्न लगातार रहैत अछि: जिनकर नाम अयल, हुनका आवाज कतेक स्वतंत्र अछि? रेशमा मौसी, मल्लाह समुदाय, दलित श्रमिक, विधवा, भूमिहीन आ स्त्रीसभा अधिकांश ठाम लेखकक स्मृतिसँ पढ़ल जाइत छथि। 'सभक योगदानक प्रजातन्त्र'क दावाक परीक्षा लेल निर्णयक वास्तविक सहभागिता, संसाधनक पहुँच आ अपन भाषामे व्यक्त कथन चाही। ठाकुर एहि अभावकेँ चिह्नित करैत छथि; ई आलोचनाक महत्त्वपूर्ण नैतिक उपलब्धि अछि।

६. अरेड़क तथ्यगत अन्तर : त्रुटि-सूची नहि, सत्यापन-कार्यसूची

पहिल अध्ययनक बारहम खण्डमे प्रस्तुत छ: प्रश्न ग्रन्थक विधिगत आधारकेँ ठोस बनबैत अछि। फुटबॉल खेलाड़ीक संख्या पन्द्रह अथवा तेरह, राजकिशोर मिश्रक परीक्षा-स्थान दसम अथवा नवम, विश्वम्भर झाक निधनक

वर्ष १९६९ अथवा १० नवम्बर १९७०, अल्सर अथवा एपेन्डिक्स सम्बन्धी कथन, अरेड़ नामक दू व्युत्पत्ति, आ प्राचीन यात्रासँ जुड़ल दावासभ—एहि सभकेँ आलोचक मिलान करैत छथि। एतय 'गलती पकड़बाक' उत्कंठासँ अधिक मूल्यवान बात जाँचक अगिला ठोस साधनक नाम देब अछि।

एहि प्रश्नक समाधानक लेल विद्यालयक पञ्जी, बोर्ड-परिणाम, मृत्यु-प्रमाणपत्र, पारिवारिक अभिलेख, अस्पतालक दस्तावेज, राजस्व-नक्शा, पुरान स्थाननाम आ स्वतंत्र मौखिक साक्षात्कार अपेक्षित छथि। ठाकुर सहज भावसँ कोनो एक पाठ मानि 'सुधार' नहि करैत छथि। ई संयम साहित्यिक सम्पादकक एकटा महत्वपूर्ण गुण अछि। मुदा दोसर पक्ष ई सेहो जे आन्तरिक विरोधक सूची शोधक समाप्ति नहि—ओ तथ्यगत अनुसन्धानक आरम्भ भरि अछि।

पूसा कृषि संस्थानक इतिहाससम्बन्धी बाहरी तुलनाक उल्लेख पुस्तकमे अछि, मुदा सम्पूर्ण ग्रामइतिहासक बाहरी पुष्टि एहि समीक्षा द्वारा कएल गेल अछि एहन दावा नहि। 'स्वतंत्र सत्यापन'क सीमा स्पष्ट करब आवश्यक अछि। एहि दृष्टिसँ ग्रन्थ पाठककेँ स्रोतक जिम्मेदारी सिखबैत अछि आ लोक-इतिहासक अगिला संस्करण लेल संशोधनक एजेण्डा दैत अछि।

७. 'बुकमेनिया' : पुस्तकप्रेम आ कठोर आलोचनाक संग्राम

दोसर अध्ययन 'बुकमेनिया'क बारह समीक्षाकेँ पढ़ैत अछि। कवितासँ उपन्यास, स्त्री-प्रश्नसँ पञ्जी-इतिहास आ प्रवाससँ भाषिक स्मृति धरि एक विस्तृत क्षेत्र खुलैत अछि। ठाकुरक मूल स्थापना ई अछि जे साहित्यक सामाजिक अर्थकेँ महत्त्व देब आवश्यक अछि, मुदा पुस्तकप्रेम स्वयं आलोचनाक स्थान नहि लेत। ओ लेखकक नियमित पठनशीलता आ समाजक उपेक्षित लोकप्रति संवेदनशीलताकेँ स्वीकार करैत छथि, आ साथे पूछैत छथि जे प्रेमपूर्ण सहमति साहित्यिक रूपक कठिन जाँचसँ कतेक बेर दूर लऽ जाइत अछि।

'घसल अठन्नी', 'फुललोका', 'सबाक कुसुम कामिनी' आ 'ककरा के दूस्त'पर चर्चा कविता-पाठक अलग कठिनाइ खोलैत अछि। कविता रचनाक

विचार मात्र नहि; ओकर ध्वनि, विराम, बिम्ब आ भाषा-संघर्षक संरचना अछि। समीक्षामे सामाजिक प्रतिरोधक घोषणा उपयोगी होइतहुँ जँ मूल पंक्तिक कलात्मक कामकाज उपेक्षित भऽ जाय तँ विश्लेषण अपूर्ण रहैत अछि। ठाकुर ई सीमा चिह्नित करैत छथि। हुनक अपन समीक्षा सेहो सभ कविताक विस्तृत निकटपाठ नहि करैत; अतः आलोचनाक निर्देश आ स्वयं कयल पाठक अनुपातक बीच दूरी पर चर्चा जरूरी अछि।

उपन्यास-समीक्षाक प्रसंगमे 'कला', 'भामती', 'करार', 'हसीना मंजिल' आ 'ठेठ परक मौलाएल गाछ' सामाजिक अनुभवक अलग दरवाजा खोलैत अछि। 'भामती'मे अदृश्य ज्ञान-सहयोग, 'हसीना मंजिल'मे विभाजनक स्मृति आ 'ठेठ परक मौलाएल गाछ'मे प्रवासक विस्थापन ई स्पष्ट करैत अछि जे पुस्तकसभक चयन आकस्मिक नहि। मुदा चयनक सामाजिक गम्भीरता अपनहि कथात्मक समय, बिन्दुदृष्टि, पात्रक जटिलता आ शिल्पक सफलता सिद्ध नहि करैत।

८. बुकमेनियाक समालोचनात्मक सार्वजनिकता आ प्रतिक्रिया

'पाठकक प्रतिक्रिया'क संकलन एहि पुस्तकक एक विशिष्ट रचना-चिह्न अछि। टिप्पणी, प्रशंसा, प्रतिवाद आ संवाद साहित्यिक जीवनक अभिन्न भाग छथि। समीक्षा मुद्रित भेला बाद लोक कतेक रूपमे एकरा अपनबैत वा प्रश्नांकित करैत अछि—ई सूचना साहित्यिक सार्वजनिकताक इतिहास लेल मूल्यवान अछि। मुदा संलग्न प्रशंसात्मक प्रतिक्रिया आलोचकक मूल तर्कक स्वतंत्र पुष्टि नहि। एहि भेदकेँ ठाकुर स्पष्ट राखैत छथि; ई विशेष रूपसँ जरूरी अछि जतय साहित्यिक समूह, आत्मीय सम्बन्ध आ संपादकीय मंच एक-दोसरसँ जुड़ल रहैत अछि।

'दूषण पञ्जी'पर टिप्पणी जाति, अभिलेख, ज्ञानक अधिकार आ परम्पराक प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठबैत अछि। एतय सामाजिक आलोचना लेल आरोपक भाषा आ वास्तविक अभिलेखीय प्रमाणक बीच दूरी महत्त्वपूर्ण अछि। ठाकुरक अध्ययन देखबैत अछि जे पञ्जी-सन दस्तावेज एक समयमे गौरवक स्रोत आ शक्ति-वितरणक औजार दुनू भऽ सकैत अछि। मुदा कोनो विशिष्ट

ऐतिहासिक दोष वा संस्थागत पक्षपातक सत्यापन लेल मूल दस्तावेज, भिन्न पाण्डुलिपि, तिथि आ विरोधी साक्ष्य आवश्यक अछि।

ई अध्ययनक अन्तिम महत्त्व विधागत स्व-परीक्षणमे अछि: समीक्षा कतेक परिचय, कतेक कथासार, कतेक मूल्यांकन आ कतेक सामाजिक टिप्पणी? ठाकुरक उत्तर एकटा कठोर सीमा नहि, संतुलनक आग्रह अछि। अहाँक प्रिय पुस्तक लेल सभसँ बड़ी सेवा ओकर जटिलता, कमजोरी आ असहज प्रश्नकेँ सेहो देखब अछि। ई सिद्धान्त ग्रन्थक सभ पाँच अध्ययनपर पुनः लागू होयबाक चाही।

९. 'मनसरबी' : कर्मफलक विधान आ बुलकीक अनुत्तरित दुःख

तेसर अध्ययन 'मनसरबी'क पन्द्रह भागक कथा पढ़ैत अछि, मुदा ओकर मुख्य आलोचनात्मक खोज कथानकक अन्तमे अछि। कतेको दुष्ट पात्रक दण्ड अथवा पतनक बाद बुलकीक दुःख अनुत्तरित रहि जाइत अछि। 'जेहन कर्म तेहन फल'क नैतिक सूत्र एतय सर्वथा आश्वस्त नहि करैत। ठाकुर एहि विरोधकेँ उपन्यासक अर्थनिर्माणक केन्द्र बनबैत छथि। ई सफल आलोचनात्मक निर्णय अछि कारण कथा अन्तमे जे प्रश्न खुलल छोड़ैत अछि, ओकरा बलपूर्वक समाधान देब उपन्यासक गहिराइ घटा दैत।

बुलकीक श्रम, देहपर नियंत्रणक प्रतिरोध, सहायताक अस्वीकार आ पाजेबक स्मृति—एहि सभकेँ ठाकुर स्त्रीक निर्णयाधिकारक संदर्भमे जोड़ैत छथि। वस्तु-बिम्बक पढ़ाई अहिठाम विशेष मूल्यवान अछि। पाजेबक छोट पुरिया व्यक्तिगत स्मृति, अर्थहीन भऽ गेल बजार-मूल्य, प्रेमक अधूरापन आ सामाजिक हिंसाक अवशेषकेँ एक जगह एकत्र करैत अछि। आलोचनाक ई क्षण देखबैत अछि जे कथावस्तुक वर्णनक अपेक्षा एक संकेतक संरचनात्मक अर्थ निकालब साहित्यिक समीक्षा लेल कतेक उर्वर अछि।

मुदा बुलकीक आवाज आ हुनका पर लिखल पुरुष-वाचकक दृष्टि सदिखन एक नहिएँ। ठाकुर स्वयं स्त्री-पात्रक स्वतन्त्र भावजगत आ स्त्री-देहक पुरुष-दृष्टिसँ प्रस्तुत विवरणक बीच तनाव रेखांकित करैत छथि। समीक्षाक एहि सूक्ष्म निर्णयसँ उपन्यासक स्त्रीविमर्श प्रचारात्मक प्रशंसा बनि नहि रहैत।

प्रश्न ई अछि जे नायिका अपन पीड़ाक व्याख्या स्वयं करैत छथि कि ओकर अर्थ आन पात्र अथवा सर्वज्ञ वाचक अन्तमे निर्धारित करैत अछि।

१०. मनसरबीक प्रेम, भूमि, जाति आ प्रतिरोध

'मनसरबी'क कथा एक व्यक्तिक निजी दुर्भाग्यक रूपमे पढ़ल जाए तँ ओकर सामाजिक सम्बन्धक संरचना छूटि जायत। महानन्दक सूदक बही, बेगारक दबाव, जमीनक नियंत्रण, राघबक वर्गीय संकोच, नन्दक प्रतिशोध आ नैनाक समगोत्रीय विवाह-अवरोध—ई सभ परस्पर पृथक घटनाक संग्रह नहि। ठाकुर ठीक देखैत छथि जे प्रेमक अधिकार आर्थिक संसाधन, जातिगत नियम आ पारिवारिक सत्ता द्वारा लगातार सीमित कएल जाइत अछि।

राघब–बुलकीक प्रेमक नैतिक असफलताकेँ केवल एक पुरुषक कायरता कहब साधारण निष्कर्ष होयत। मर्यादा, सामाजिक भय आ वर्गीय दूरी हुनकर निर्णयमे सक्रिय अछि। तहिना नन्द–नैनाक संबंधमे प्रतिशोधसँ प्रेम दिस मुड़बाक कथा व्यक्ति भीतर परिवर्तनक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। सौदामिनीक विवेक आ राघबक मायक करुणा न्यायकेँ केवल दण्ड-विधानसँ अधिक व्यापक रूप दैत अछि। मुदा करुणा आ व्यक्तिगत परिवर्तन समाजक संस्थागत अन्यायकेँ पूर्णतः समाप्त नहि करैत।

ठाकुर एहि अनेक नैतिक मार्गकेँ अलग धरैत छथि। तथापि उपन्यासक संघर्षक समयक्रम, दृश्य-स्थानान्तरण आ कथानकक कारणिकता पर आओर व्यवस्थित आलेख बनल रहितय तँ सामाजिक अर्थक संग आख्यानशास्त्रीय व्याख्या आओर सघन होइत। जेठ साहित्यिक प्रश्न इएह अछि: शक्ति-विरुद्ध कथानकक संरचना स्वयं पाठककेँ कखन आशा, कखन भय आ कखन नैतिक असहमति अनुभव करबैत अछि? एहि संरचनाक सूक्ष्म विच्छेदनक सम्भावना पुस्तक खोलैत अछि, पूर्णतः समाप्त नहि करैत।

११. 'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना' : यात्रा, चित्रकला आ लोकसृजन

चारिम अध्ययन एक विधामे आबद्ध नहि। मिथिला चित्रकला, हॉफलोंगक सांस्कृतिक सम्पर्क, बृन्दावनक धार्मिक नगर, लोअर दिवांग घाटीक अनुभव,

नन्दा-राजजात, संगाईप्राऊ आ ग्रामीण कथा-समीक्षा एक संग उपस्थित अछि। ठाकुर एहि फैलावकेँ विषयक अव्यवस्था कहिकऽ त्यागैत नहि; ओ स्थान बदललापर प्रश्नक निरन्तरता खोजैत छथि। लोक अपन सामाजिक संसार कोना बनबैत अछि, बाहरक दृष्टि ओकरा कोना देखैत अछि, आ स्त्रीक श्रम/सृजनक दृश्यता कतेक अछि—एहि साझे प्रश्नसँ खण्डकेँ जोड़बाक प्रयास उपयोगी अछि।

मिथिला चित्रकलाकेँ 'समानान्तर साक्षरता' कहबाक प्रस्ताव विशेष विचारयोग्य अछि। चित्रक रेखा, रंग, प्रतीक आ स्त्रीक सर्जनात्मक अभ्यासकेँ केवल सजावट अथवा बजारक उत्पाद मानल जाए तँ दृश्य ज्ञानक सामाजिक अर्थ छुटैत अछि। ठाकुर एहि विचारक मूल्य पहचानैत छथि; मुदा साक्षरता शब्दक प्रयोगको व्यापक प्रमाण चाही—कोन चित्रक प्रसार, कोन स्त्रीक अर्जन, कोन पीढ़ीक बीच शिल्प, आ कोन संस्था आर्थिक लाभ नियंत्रित करैत अछि? सांस्कृतिक सम्मान आ वास्तविक सृजनाधिकारक अध्ययन अलग-अलग करब आवश्यक अछि।

यात्रा-वृत्तान्तमे 'हम'क भूमिका बहुतेक सक्रिय अछि। लेखक आगन्तुक, सहभागी, प्रश्नकर्ता आ स्मृतिकारक रूप बदलैत छथि। एकर लाभ अछि प्रत्यक्ष दृश्य आ संवाद; सीमा अछि जे दर्शकक आश्चर्य कखनो समुदायक अपन व्याख्याकेँ ढाँपि सकैत अछि। ठाकुर एहि संभावनाक संकेत करैत छथि, किन्तु क्षेत्र-अवलोकनक समय, भाषिक मध्यस्थ, कथकक सहमति आ अनुवादक विवरणक अलग तालिका रहितय तँ शोध-दृष्टि अधिक विश्वसनीय होइत।

१२. 'प्रबन्ध'क शिल्प : 'हम'क बहुवचन आ क्षेत्रक प्रश्न

हॉफलोंग अथवा उत्तर-पूर्वक प्रसंगमे शिल्पक प्रश्न केवल पर्यटन-वर्णनक नाहीँ। लेखकीय दृष्टि अपरिचित समाजकेँ कतेक सम्मानसँ देखैत अछि, आ कतेक बेर अपने सांस्कृतिक अनुभवकेँ मानक बनबैत अछि—एहि प्रश्नक उत्तर गद्यक सर्वनाम, संवाद आ मूल्यविशेषणमे लुकायल होइत अछि। ठाकुर यात्रा-वृत्तान्तक सामाजिक जिज्ञासाकेँ स्वीकृति दैत छथि, साथे बाहरी

शोधसँ पुष्ट करबाक शेष क्षेत्र चिह्नित करैत छथि। ई विवेक जँ प्रत्येक यात्रा-खंडक दृश्य-विश्लेषणसँ जोड़ल जाय तँ आलोचनाक शक्ति बढ़त।

‘गामक जिनगी’ आ ‘जीवन संघर्ष’पर समीक्षा देखबैत अछि जे लोकरचना आ आधुनिक सामाजिक समस्या कतेक सहज जुड़ि सकैत अछि। बाढ़ि, जीविका, जनजीवन आ स्थानीय समाधानक प्रश्न नीक साहित्यिक विषय होइतहुँ साहित्यक मूल्य कर्तव्यपरक सन्देश मात्र नहि। पात्रक स्वाभाविकता, कथनक टकराव, कालक विस्तार आ भाषा-कौशल अलग जाँच माँगैत अछि। ठाकुर ई अन्तर पहचानैत छथि; तथापि मूल कथा-रचनाक विशिष्ट अंशक निकटपाठ अपेक्षाकृत सीमित अछि।

संग्रहक भीतरी एकता दू स्तर पर देखल जा सकैत अछि—लेखकक रुचिक निरन्तरता आ सम्पादकक बनाएल रचना-क्रम। ठाकुर पहिल स्तर पर अधिक बल दैत छथि। दोसर स्तर, अर्थात् कतेक विविध रचना कोन सम्पादकीय तर्कसँ एक छाजनमे राखल गेल अछि, संकलनक पाठन-अनुभवमे विशेष भूमिका रखैत अछि। प्रस्तुत समीक्षा एहि अद्यावधिक प्रश्नकेँ खण्डक एक संभावित विस्तार मानैत अछि।

१३. ‘विदेह सदेह २९’ : एक संग्रहक अनेक भाषिक देह

पाँचम अध्ययनमे कथा, लोकगीत-अध्ययन, यात्रा-वृत्तान्त, लोककला आ सामाजिक प्रतिवादक लेख एकत्र छथि। ‘पण्डिताइन’, ‘बुरिराज’, ‘चन्दा’, ‘प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री’, ‘सखी कुन्ती’, ‘पुरुषक नहि विश्वासे’ आ ‘परिस्थिति लेखिका’ जकाँ कथाक विश्लेषण गद्यक सामाजिक विस्तार देखबैत अछि। ठाकुर एहि रचनासभमे स्त्रीक वाणी, संस्थागत आडम्बर, सम्पत्तिक हिंसा आ स्वयं कथा लिखबाक अधिकारक प्रश्न खोजैत छथि। ई चयन संकेत करैत अछि जे एक संग्रहक पाठ अलग-अलग साहित्यिक विधाक बीच सम्बन्ध देखबाक माध्यम बनि सकैत अछि।

‘परिस्थिति लेखिका’क कथा भीतर कथा आ स्त्रीक रचनात्मक आत्मरक्षाक प्रश्न एहि समग्रक एक केन्द्रीय धागा अछि। स्त्री केवल कथा-पात्र छथि कि कथा कहबाक अधिकारी सेहो? ‘पण्डिताइन’क अनुपस्थित उपस्थिति,

'चन्दा'क हिंसा आ 'सखी कुन्ती'क स्मृति एहि प्रश्नक भिन्न उत्तर दैत अछि। ठाकुर विषयक व्याप्ति सुचिह्नित करैत छथि; मुदा एहन कथामे वाचक-परिवर्तन, मुक्त अप्रत्यक्ष कथन, समय-विच्छेद आ कथानक-भीतर-कथानकक तकनीकी जाँच अधिक विस्तृत भऽ सकैत छल।

लोकगीत, फकड़ा, मधुश्रावणी, जोगगीत, सीता, सुग्गा-कौआ, भोजन आ नानीक मौखिक कथा सामाजिक अर्थक समृद्ध भण्डार अछि। मुदा गीतक लिखित उद्धरण स्वयं प्रदर्शनक संपूर्ण संदर्भ नहि। के गाबैत छथि, कोन समय, कोन श्रोता समक्ष, कोन बोलीमे आ कोन सामाजिक असमानताक भीतर—एहि प्रश्नक अभावमे गीतक विद्रोही अर्थ अनुमान बनि रहि सकैत अछि। ठाकुर इएह मूल पद्धतिगत अन्तर समझबैत छथि, यद्यपि सभ आलेखक साक्ष्य-स्थिति अलग तालिकामे नहि देल गेल अछि।

१४. लोकगीत, स्त्रीक अनुभव आ परम्पराक भीतर प्रतिवाद

पाँचम अध्ययनक उपलब्धि लोकपर्वकेँ 'केवल उत्सव'क रूपमे नहि पढ़ब अछि। मधुश्रावणीक गीत, स्त्रीदेहपर अनुष्ठानक व्यवहार, सीताक लोकस्वर आ फकड़ामे सार्वजनिक हास्य अपन अर्थमे प्रतिरोधक संभावना राखैत अछि। ठाकुर एहि सम्भावनाकेँ समाजशास्त्रीय निष्कर्ष बनबैत समय स्थानीय भिन्नता आ प्रेक्षणक आवश्यकता जपैत छथि। एतय साहित्यिक अर्थ आ मानवशास्त्रीय साक्ष्यक अंतर जीवित अछि।

'छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन' आ तमाकूविरोधी लेख देखबैत अछि जे परम्पराप्रेम आ सामाजिक सुधार परस्पर विरोधी नहि मानल गेल अछि। ग्रन्थक समीक्षा एहि आन्तरिक असहमतिक प्रशंसा करैत अछि। मुदा नैतिक मूल्यांकन आ चिकित्सकीय तथ्यक पुष्टि अलग विधिसँ होयत—एहि चेतावनीकेँ अन्य ऐतिहासिक दावासभक जकाँ स्थिर रूपसँ बरतब जरूरी अछि। आलोचनाक ई बहुरूपी अनुशासन सहमति-आधारित लोकसाहित्य अध्ययनसँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

स्रोत-श्रेयक प्रसंगमे पाब्लो नेरुदाक नामसँ प्रचारित 'You start dying slowly'क उल्लेख सम्बन्धी पुस्तकक टिप्पणी विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। ठाकुर संग्रहमे कविक देश आ रचनाक मूल श्रेयक भ्रम चिह्नित करैत छथि।

एहि उदाहरणक आलोचनात्मक अर्थ ई अछि जे प्रसिद्ध नामक पुनरावृत्ति काव्य-श्रेयक प्रमाण नहि। तथापि एहि खण्डक भीतर कयल तथ्य-संशोधनकेँ विश्वसनीय स्रोतसँ पुनः मिलान करब एक स्वतंत्र संपादकीय चरण रहत; समीक्षा कएल दावा आ प्रत्यक्ष सत्यापन दुनू एक नहि।

तृतीय विभाग : पाँच पाठक बीच चलैत साझा सूत्र

१५. 'लोक' : जनजीवन कि चयनित स्मृतिक नाम?

पाँचो अध्ययनमे 'लोक' शब्द अनेक अर्थक संग घूमैत अछि। 'अरेड़'मे लोक स्मृतिक स्रोत अछि; 'बुकमेनिया'मे लोक साहित्यक सामाजिक पाठक; 'मनसरबी'मे लोक शक्ति-वितरणक भीतर संघर्षरत समूह; 'प्रबन्ध'मे लोक सांस्कृतिक सृजनक वाहक; 'सदेह २९'मे लोक गीत, अनुष्ठान, कथा आ सामाजिक ज्ञानक सक्रिय संसार। एहि विविधतासँ आलोचनाक क्षितिज खुलैत अछि। मुदा 'लोक'केँ एक सर्वस्वीकार्य नैतिक इकाई मानि लेलासँ जाति, लिंग, भूमि, उम्र आ व्यवसायगत अन्तर छिपि जाइत।

ठाकुरक प्रशंसनीय गुण ई अछि जे ओ बहुतेक ठाम सामूहिकता पर प्रश्न रखैत छथि। गामक 'सभक योगदान', लोकगीतक 'समस्त मैथिलानी', उपन्यासक 'समाज', चित्रकलाक 'स्त्री'—ई सभ एकवचन पद छथि, जकर भीतर अनेक भिन्न स्थिति बनल रहैत अछि। आलोचनाक जिम्मेवारी समूहक नाम लिहला मात्रसँ पूरी नहि होइत; ओकर भीतरक असमान आवाजकेँ सुनबाक प्रमाण-पद्धति जरूरी अछि।

ई कारणेँ एहि ग्रन्थक सामान्य सिद्धान्त 'लोकक सम्मान' मात्र नहि, 'लोकक भीतर प्रमाणित बहुवचन' होयबाक चाही। जँ हम लोकस्मृतिमे उद्धृत स्त्रीक नाम, कथन-तिथि, भाषिक रूप आ प्रतिक्रिया रखैत छी, तँ सहेजब स्वयं ज्ञान-राजनीतिक काज बनैत अछि। ठाकुर एहि दिशाक अनेक सुझाव देलनि; ओकर संगठित प्रतिमान तैयार करब अगिला अनुसन्धानक काज अछि।

१६. स्त्रीक आवाज : उपस्थित पात्रसँ व्याख्याक अधिकार धरि

ग्रन्थक पाँच खण्डमे स्त्री एक समान पात्र नहि। अरेड़क शिवदुलारी देवी आ रेशमा मौसी स्मृतिक समाज बनबैत छथि। बुकमेनियाक कविता-आलोचनामे स्त्री प्रतिरोधक पाठ होइत छथि। मनसरबीक बुलकी अन्यायसँ प्रत्यक्ष टकराइत छथि। चित्रकलाक स्त्री अपन कला द्वारा अर्थ लिखैत

छथि। सदेह २९क लोकगीतक गायिका आ कथाक लेखिका भाषाक मालकिन होयबाक प्रश्न उठबैत छथि। एहि क्रमक समेकित अध्ययन पुस्तकमे और केन्द्रित भेने ओकर स्त्रीविमर्शक विचार-सूत्र स्पष्ट होइत।

ठाकुर अनेक अवसरपर 'स्त्री पर लिखल' आ 'स्त्री द्वारा कहल'क अन्तर चिन्हैत छथि। मुदा आलोचनाक अपन गद्य कतेक बेर स्त्रीक प्रतिरोधकेँ महान आत्मबल, करुणा, त्याग आ मर्यादाक शब्दावलीमे रूपान्तरित करैत अछि? ई परीक्षण आवश्यक अछि। स्त्रीक अस्वीकृति, जिद, क्रोध, भूल आ असहमतिकेँ ओतबे सम्मान भेटबाक चाही जतेक त्याग आ सहनशीलताकेँ। एतय नायिकाक जटिलताकेँ आदर्श-प्रतिमामे बदलि देबाक जोखिम रहैत अछि।

बुलकीक पाजेब, शिवदुलारी देवीक श्रम आ मिथिला चित्रकला एहि जोखिमसँ बचबाक तीन भिन्न रास्ता देखबैत अछि—वस्तुक सजीव स्मृति, दिनचर्याक ठोस कर्म आ सृजनात्मक अभिव्यक्ति। एक समावेशी स्त्री-अध्ययन लेल एहि तीनूकेँ काव्यात्मक भावना मात्र नहि, निर्णयक भौतिक शर्तक संग पढ़ब जरूरी अछि।

१७. जाति, वर्ग, अर्थव्यवस्था : सहचर प्रश्न, एक अर्थ नहि

'अरेड़'क सामुदायिक इतिहासमे भूमिदान, श्रमिकक अदृश्य श्रम आ सार्वजनिक स्थलपर अधिकारक प्रश्न अछि। 'बुकमेनिया'मे पञ्जी, सामाजिक प्रतिष्ठा आ लिखित ज्ञानक अधिकार अछि। 'मनसरबी'मे कर्ज, जमीन, गोत्र आ स्त्री-नियन्त्रण प्रत्यक्ष कथात्मक शक्ति बनैत अछि। 'प्रबन्ध' आ 'सदेह २९'मे सांस्कृतिक उत्पाद, यात्रा, हस्तशिल्प आ श्रमक मान-प्रतिष्ठा एकत्र उपस्थित अछि। एहि सबैकेँ 'सामाजिक असमानता'क एक सामान्य शीर्षकमे रखब पर्याप्त नहि।

जाति परिवारिक विवाह-नियम, पेशा, संसाधन आ परम्परागत श्रेणीकरणमे काम करैत अछि। वर्ग भूमि, ऋण, कमाइ आ उपभोगक असमानतामे देखल जाइत अछि। दुनू एक-दोसराक संग जुड़ि सकैत अछि, मुदा पूर्णतः समान नहि। ठाकुर 'मनसरबी'पर अपन विश्लेषणमे एहि अन्तरकेँ स्पष्ट करैत

छथि। एही विवेककेँ गामक इतिहास आ सांस्कृतिक उत्पादनक प्रसंगमे अधिक लागू करब चाही।

आलोचनाक सफलता नैतिक घृणाक भाषा बढ़ेनाइ नहि, संस्था आ व्यवहारक निर्दिष्ट रूप चिन्हेनाइ अछि। 'महानन्द क्रूर छथि' कहब एक स्तर अछि; हुनक सूदक बही, बेगार, हिंसाक साधन आ सामाजिक डरक संयोजन खोलब दोसर स्तर। 'गाममे योगदान सभक अछि' कहब एक स्तर अछि; शिक्षालय, भूमि आ सार्वजनिक निर्णयक विभाजित पहुँच देखब दोसर। पुस्तक अनेक ठाम दोसर स्तर छुबैत अछि, ओहि कारण मूल्यवान अछि।

१८. भूमि, स्थलनाम आ भाव-भूगोल

'अरेड़'क राजकीय सीमा आ सांस्कृतिक अपनत्व, 'मनसरबी'क जमीन-आधारित सत्ता, यात्रानिबन्धक बदलैत भूगोल आ लोकगीतक क्षेत्र-विशिष्ट प्रदर्शन—पाँचो अध्ययनमे स्थल पाठक अर्थ बनबैत अछि। भूगोल पृष्ठभूमि नहि; ओ दैनन्दिन आवागमन, जीविका, मान-प्रतिष्ठा आ स्मृतिक शर्त निर्धारित करैत अछि। ठाकुर 'भाव-भूगोल'क अवधारणाकेँ पहिल अध्ययनमे महत्त्व दैत छथि; एकरा अन्य खण्डसँ जोड़ल जाए तँ पूरा पुस्तकक स्थान-सिद्धान्त रचि सकैत अछि।

गामक नामक लोकव्युत्पत्ति आ राजस्व अभिलेखक शब्द एक-दोसरसँ भिन्न साक्ष्य छथि। तहिना काव्यात्मक यात्रा-वर्णन आ भौगोलिक मानचित्रक प्रमाण अलग। स्थलनायकक आत्मीयताकेँ नकारब अनुचित होयत, मुदा स्थानीय सम्बन्धक गर्वक कारण अतीतक असत्यापित कथा निर्विवाद इतिहास बनि जाए, से स्वीकार्य नहि। आलोचना एहि दोहरापनकेँ पकड़ेबाक चेष्टा करैत अछि।

एक आगे बढ़बाक उपाय प्रत्येक स्थलकेँ चारि खण्डमे पढ़ब अछि—दृश्यक साहित्यिक विन्यास, लोकस्मृतिक व्याख्या, भौतिक/प्रशासनिक अभिलेख आ वर्तमान सामाजिक उपयोग। एहन वर्गीकरण 'अरेड़'सँ 'नन्दा-राजजात' आ 'सौराठ'क लेखधरि लागू भऽ सकैत अछि। ई पुस्तकक अपूर्ण रहि गेल तुलनात्मक सम्भावना अछि।

१९. साहित्यिक आलोचनामे दृश्य, वस्तु आ अनकहल संकेत

सामाजिक विषय पर लिखैत समय दृश्यसँ तर्क बनेबाक सामर्थ्य बेसी असरकारी होइत अछि। रेशमा मौसीक 'मौसी' सम्बोधन, विश्वम्भर झाक शोकमे पुस्तकालयक उदासी, बुलकीक पाजेबक पुरिया, स्त्रीक चित्रित रेखा, कथाक अन्तमे शोकध्वनि—ई सभ सूक्ष्म वस्तु समाजक व्यापक प्रश्नकेँ मूर्त रूप दैत अछि। ठाकुरक विश्लेषणक सशक्त क्षण इएह छथि। ओ सैद्धान्तिक शब्दक लंबा व्याख्यानक बदला एक दृश्यक भीतरी विरोध पढ़ैत छथि।

मुदा सभ ठाम एहन घनत्व नहि। किछु अध्यायमे मूल कृतिक विषय-सूची वा कथानकक क्रम अत्यधिक विस्तारसँ आबि जाइत अछि। एहि प्रस्तुति सँ नव पाठक सामग्रीक परिचय पबैत अछि, मुदा विश्लेषणक ऊर्जा एक रूपमे वितरित नहि रहैत। पाठककेँ जे जानब जरूरी अछि आ आलोचनाकेँ जे सिद्ध करब जरूरी अछि, एहि दुनूक बीच स्पष्ट अनुपात साहित्यिक कारीगरीक कसौटी अछि।

ओहि कसौटीपर पुस्तक सफल किंतु असमान अछि। विशिष्ट वस्तु-विम्बक विवेचना (पाजेब, पुरिया, बही, पञ्जी, चौपाड़ि)क संग कथन-दूरी, दृश्य-विराम आ पाठकीय अपेक्षाक अध्ययन अधिक होयत तँ समीक्षाक औपचारिक शक्ति बढ़त। सामाजिक विचारक संग साहित्यिक निर्माणप्रक्रियाक काज सेहो देखाइत।

चतुर्थ विभाग : आख्यानशास्त्रीय आ प्रमाण-विवेकक समीक्षा

२०. वाचक : आत्मीय 'हम', सर्वज्ञ दृष्टि आ आलोचकक तेसर स्वर

पहिल अध्ययनक 'हमर गाम' लेखकक अनुभवपर निर्भर अछि। उपन्यास 'मनसरबी'मे सर्वज्ञ वाचक पात्रक भीतर-बाहरक बहुत बात कहि सकैत अछि। यात्रा-वृत्तान्तमे 'हम' कखनो आगन्तुक, कखनो साक्षी, कखनो व्याख्याकार अछि। कथा-संकलनमे पात्रक स्वतन्त्र आवाज आ कथाकारक टिप्पणीक दूरी बदलैत अछि। एहि भिन्न वाचक-संरचनाकेँ ठाकुर चिन्हैत छथि, मुदा ओकर व्यवस्थित पारस्परिक तुलना पुस्तकमे सीमित अछि।

आख्यानक गहन अध्ययन लेल प्रश्न अछि—सूचना के दैत अछि, ककरा एखन नहि भेटैत अछि, आ निर्णय पाठक कखन बना सकैत अछि? संस्मरणक वाचक अपन कथनक विश्वसनीयता कोना स्थापित करैत अछि? सर्वज्ञ कथाकार स्त्रीक दुख पर कतेक हस्तक्षेप करैत अछि? यात्रिकक आश्चर्य कखन ज्ञानक दावे बदलैत अछि? आलोचकक तेसर स्वर कखन मूल वाचकक अर्थ स्वीकार करैत, कखन प्रतिवाद? एहि प्रश्नसभकेँ एक मानचित्रमे रखल जाय तँ ग्रन्थक शीर्षकक 'पाँच अध्ययन' एक विशिष्ट नरेटोलॉजिकल कार्यक्रम बनि सकैत अछि।

'विश्वसनीय वाचक'क अर्थ हर तथ्य सत्य होयब नहि; एहि शब्दक अर्थ कथा-व्यवस्थाक भीतर पाठकक विश्वास, दृष्टिक सीमा आ कथनक उद्देश्यक सम्बन्ध अछि। लोकइतिहासमे वाचकक विश्वसनीयता साहित्यिक आ ऐतिहासिक दू अलग प्रश्न बनैत अछि। आलोचक जँ एहि भेदकेँ लगातार उद्घाटित करथि तँ ई पुस्तकक स्रोत-समीक्षात्मक महत्व आओर बढ़त।

२१. कथाकाल आ दस्तावेजक समय

लोकस्मृतिक समय सहसा सीधा कालक्रम नहि होइत। व्यक्ति अपन बचपनसँ पूर्वजक कथा आ पूर्वजसँ वर्तमान ग्रामसभाक प्रसंगमे लौटैत छथि।

‘अरेड़’मे एहि समय-गतिकेँ ठाकुर साहित्यिक सामर्थ्य मानैत छथि, मुदा ऐतिहासिक तिथिक पञ्जी अलग चाहैत छथि। ई सही अन्तर अछि। स्मृतिजनित अक्रम साहित्यिक शिल्प अछि; तिथि-संबंधी असंगति संशोधनक प्रश्न अछि। दुनूकेँ एक नाम ‘अव्यवस्था’ देब अनुचित होयत।

‘मनसरबी’क पन्द्रह भागमे कथानकक संघर्ष समयक संग गहराइत अछि; किछु पात्रक परिवर्तन आ केकरो न्याय-वंचना अन्तमे नैतिक विराम बनैत अछि। अध्यायक लय आ समयक परिवर्तनक अधिक विस्तारसँ विवेचन सम्भव छल। यात्रा-ग्रन्थमे आगन्तुकक छोट उपस्थितिक बीच ‘पुरान परम्परा’क दीर्घकालीन दावा आवैत अछि; एतय दृश्य-समय आ इतिहासक समय अलग करब पद्धतिगत अपेक्षा अछि।

सम्पादकीय दृष्टिसँ समयक तीन तिथि चाही—घटना कहिया भेल, कथक कहिया सुनौलनि, आ लेखक कहिया लिखलनि। एहि तिहरी समय-पञ्जीक प्रस्ताव पुस्तकक अनेक अध्यायक आलोचनासँ निसृत होइत अछि। ओहि तरह कविता, कथा आ निबन्धक प्रकाशन-वर्ष सेहो संस्करण-अन्तर जाँचबामे उपयोगी होयत।

२२. उद्धरण, श्रेय आ स्रोतक वर्गीकरण

ग्रन्थमे अनेक ठाम मूल कृतिक नाम, अध्यायक शीर्षक, पृष्ठ अथवा बाहरी संस्थागत सन्दर्भ देल गेल अछि। ई आलोचनाक आधार दिस सकारात्मक कदम अछि। मुदा ‘फलाँ लेखक कहैत छथि’क प्रमाणक रूप स्वतः समान नहि। कतेक वाक्य मूल पुस्तकसँ शब्दशः, कतेक सारांश, कतेक सामाजिक माध्यमक टिप्पणी आ कतेक आलोचकक अनुमान—एहि भेदक मुद्रणीय संकेत रहब उपयोगी होयत।

पाँचम अध्ययनमे प्रसारित कविता-श्रेयक उदाहरण बतबैत अछि जे प्रसिद्ध व्यक्तिक नाम आलोचककेँ चकमा दऽ सकैत अछि। ‘अरेड़’मे लोकगाथाक अलौकिक दावे, ‘बुकमेनिया’मे इतिहासक पञ्जी-प्रसंग, ‘प्रबन्ध’मे स्थलक प्रत्यक्ष अवलोकन—सभक लेल एकहि प्रकारक साक्ष्य पर्याप्त नहि। एहि कारण स्रोतक कम-सँ-कम पाँच श्रेणी उपयोगी होयतः प्रत्यक्ष शब्द-पाठ,

मौखिक कथन, प्रशासनिक/संस्थागत दस्तावेज, स्वतंत्र शोध आ समीक्षात्मक अनुमान।

अपन उद्धरणक संख्या बढ़ेबासँ विश्लेषण अपने मजबूत नहि होइत। प्रत्येक उद्धरणक काज स्पष्ट चाही—की ओ शिल्पक नमूना अछि, की ऐतिहासिक दावा, की पात्रक कथन, की सामान्य आलोचनात्मक मत? स्रोतक एहन व्याख्यात्मक अनुशासन ग्रन्थकेँ केवल पठनशील प्रतिभाक प्रदर्शनसँ स्थायी शोधसाधन बनौने रहत।

२३. ऐतिहासिक सत्यापनक सीमा आ सावधान भाषा

अनेक ठाम पुस्तक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सावधानी बरतैत अछि: ‘पुस्तकमे दावा अछि’, ‘एतय प्रमाण आवश्यक अछि’, ‘एकर स्वतंत्र पुष्टि नहि भेल’ आदि। एहि शब्दावलीमे एक नैतिक अनुशासन अछि—लोकश्रुतिक आदर करैतहुँ ओकरा न्यायिक/ऐतिहासिक सिद्ध घटना घोषित नहि करब। एहि विवेकक विशेष प्रशंसा चाही, कारण प्रादेशिक इतिहासक लेखनमे गौरवक दबाव कभी-कभी संशयक स्थान घटा दैत अछि।

मुदा सावधान भाषा अपने ऐतिहासिक सत्यापन नहि। एकर बाद काज शेष अछि: दस्तावेज खोज, एकाधिक साक्षी, तिथि, मूल पाठक संस्करण आ आवश्यक विशेषज्ञक विवेचन। एतय आलोचकक भूमिका स्पष्ट सीमा बताउ: ओ जँ मूल पुस्तकक समीक्षा करैत छथि, तँ प्रत्येक प्रतिज्ञाक बाहरी पुष्टि करबाक दावा न करथि। प्रकाशित पाठसँ की निकलैत अछि आ बाहरी अनुसन्धानसँ की भेटल, दू अलग स्तम्भ उपयुक्त रहत।

एहि खण्डक निर्णय ई अछि जे गजेन्द्र ठाकुरक स्रोत-समीक्षात्मक आग्रह दिशादर्शक अछि, किन्तु पूर्ण अभिलेखीय अनुसन्धानक स्थानापन्न नहि। एहि सीमा स्वीकार करब पुस्तकक गरिमा कम नहि करैत; बरु भविष्यमे कएल जएबाक श्रमक सीमा-पट बनबैत अछि।

२४. भाषिक रूप, वर्तनी आ लोकबोलीक मर्यादा

मैथिली गद्यक विविध रूप एहि पाँच खण्डमे बहैत अछि। यात्रा-वृत्तान्तक भाषा, ग्रामीण स्मृतिक सम्बोधन, कविता-समीक्षाक पदावली, उपन्यासक संवाद आ मानवशास्त्रीय संज्ञा सभ एकसमान प्रचलित भाषा-रजिस्टरमे नहि लिखल जा सकैत। ठाकुर भाषा-सम्बन्धी चर्चामे लोकस्वर सुरक्षित रखबाक आग्रह करैत छथि, संगहि वर्तनी, नाम, तारीख आ स्रोत-निर्देशनक स्थिरता चाहैत छथि। ई सम्पादकीय रूपसँ उचित सन्तुलन अछि।

मुदा शुद्धिकरणक नामपर भिन्न बोलीक लक्षण मिटा देब एक खतरा अछि। ‘अरेड़’, ‘अरेरू’ आ ‘अनरेर’ एके शब्दक अकस्मात त्रुटि नहि; ई तीन रूप सामाजिक इतिहासक विषय बनि सकैत अछि। तहिना स्त्रीक फकड़ा अथवा जनजातीय कथनकँ मानक मैथिलीमे समेटैत समय मूल भाषाक ध्वनि आ अभिप्रायक नुकसान होयबाक संभावना अछि। अनुवादक रीतिक संकेत आ मूल पंक्तिक संरक्षण आवश्यक अछि।

पुस्तकक भाषिक भविष्य तीन उपायसँ मजबूत होयत—नाम/स्थानक नियंत्रित सूची; उद्धृत मूल वाक्यक स्पष्ट स्रोत; आ बोलीक सचेत अंतर सुरक्षित राखैत टंकणदोष, खण्डित योजक, शीर्षक तथा अनुक्रमक एकरूपता। साहित्यिक समीक्षा जँ पाठ-सम्पादनक ई बारीकी देखैत अछि तखन ओकर विवेक पाठक अनुभवधरि पहुँचैत अछि।

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

२५. पाँचो अध्ययनक प्रमुख उपलब्धि

संग्रहक पहिल उपलब्धि मैथिलीमे विविध विधा पर व्यवस्थित आलोचनात्मक परिश्रम अछि। पाँचो कृतिक विवरण केवल सामान्य प्रशस्ति नहि; अध्यायक विशिष्ट प्रश्न, पात्रक दृश्य, नामक स्तर, सामाजिक संसाधन आ अनेक असंगतिक पहचान संग पुस्तक पढ़ल गेल अछि। दोसर उपलब्धि सामाजिक बहुवचन अछि। लेखक गाँवक स्मृतिसँ लोकगीतक स्त्रीस्वर, जाति, प्रवास आ आञ्चलिक सांस्कृतिक संवादधरि बहैत छथि। तेसर उपलब्धि प्रमाण-संबंधी जागरूकता अछि। विवरणक भावनात्मक ताकतकेँ अभिलेखीय पुष्टि मानि लेबाक कठिन प्रलोभन ओ अनेक ठाम रोकैत छथि।

चारिम उपलब्धि ई अछि जे साहित्यिक पाठक अन्तिम अर्थ बंद नहि कएल गेल। 'मनसरबी'क अनुत्तरित न्याय, लोक इतिहासक बहु-व्युत्पत्ति, पुस्तकप्रेमक आलोचनात्मक सीमा, यात्रा-वृत्तान्तक बाहरी दृष्टि, आ लोकगीतक संदर्भ-निर्भरता—ई सभ प्रश्न खुलल रखबाक विवेक दैत अछि। पाँचम उपलब्धि संपादकीय व्यवहारसँ जुड़ल अछि: लेखक पाठक आगाँ अगिला अनुसन्धान, दस्तावेज-संग्रह आ पाठ-परिष्कारक ठोस कार्यक्रम रखैत छथि।

पुस्तकक श्रेष्ठ दृश्य ओतय अछि जतय रूप आ समाजक संयुक्त पाठ होइत अछि। रेशमा मौसीक एक सम्बोधन, विश्वम्भरक शोक, बुलकीक पाजेब, चित्रकला-साक्षरताक प्रस्ताव आ लोककंठक गीतक प्रदर्शन—ई सभ समग्र समीक्षा लेल स्मरणीय पाठ-चिह्न बनैत अछि। एहि आधारपर पुस्तक मैथिली आलोचनामे कामचलाऊ परिचयक अपेक्षा गम्भीर संवादक प्रयास कहल जाए।

२६. प्रमुख सीमासभ : विस्तार, अनुपात आ विश्लेषणक घनत्व

पुस्तकक मुख्य रचनात्मक सीमा पांचो अध्ययनक अनुपातमे देखाइत अछि। कतिपय ठाम मूल कृतिक विषय-वस्तु, अध्यायक्रम आ उदाहरण

पर्याप्त विस्तारसँ कहल जाइत अछि; मुदा एकर संग शिल्पीय प्रश्नक उतबे घनत्व नहि। कथानक-सार नव पाठक लेल उपयोगी अछि, मुदा समीक्षात्मक निष्कर्ष ओकर स्थान नहि लऽ सकैत। 'बुकमेनिया' आ 'प्रबन्ध'क विश्लेषणमे ई प्रश्न विशेष रूपसँ उठैत अछि। साहित्यिक समीक्षा तखन प्रखर होइत अछि जखन 'की भेल'क बाद 'कोना कहल गेल' आ 'एहन कहल गेलापर की अर्थ बनल'क उत्तर भेटैत अछि।

दोसर सीमा मूल उद्धरणक निकटपाठ आ व्यावहारिक स्रोत-वर्गीकरणक असमानता अछि। तथ्यगत प्रश्नक सूची बनल अछि, मुदा सभ बाहरी शोधसम्बन्धी प्रस्तावक मूल दस्तावेज उपलब्ध नहि। तेसर सीमा सामाजिक संवेदनाक कभी-कभी व्यापक वाक्य बनि जाएब अछि। 'लोक', 'स्त्री', 'समाज' अथवा 'परम्परा'क एकवचन बहुत समृद्ध भिन्नताकेँ ढाँपि सकैत अछि। लेखक एहि जोखिमकेँ चिन्हैत छथि, मुदा ओकरा सभ विश्लेषणमे एकहि अनुशासनसँ नहि दूर करैत।

चारिम सीमा दोसर-स्तरीय आलोचनाक आत्मस्थिति अछि। एक लेखकक रचनासमग्रपर पाँच समीक्षा लिखैत समय स्नेह, सहमति आ असहमतिका सम्बन्ध जटिल होइत अछि। आलोचक जँ अपन चयन-मानदण्ड, मूल प्रतिक संस्करण, उद्धरणक रीति आ समीक्षा लिखबाक अवसर/संदर्भ स्पष्ट रखथि तँ पाठक हुनकर निष्कर्षकेँ बेसी पारदर्शी ढंगसँ परखि सकत। ई सुधारक सम्भावना अछि, समग्र प्रयत्नक निषेध नहि।

२७. प्रस्तावित परिष्कार : संशोधित आलोचना-संस्करणक कार्यसूची

सर्वप्रथम प्रत्येक कृतिक परिचय निश्चित ढाँचेपर देल जाय: मूल शीर्षक, लेखक, विधा, उपलब्ध संस्करण, प्रकाशन-वर्ष, उपयोग कएल प्रति, आ समीक्षा-पृष्ठ। एक छोट तालिका पाठककेँ पाँच पाठाधारक व्यवस्थित नक्शा देत। दोसर, कथानकक पुनर्कथनक अपेक्षा २–३ प्रतिनिधि दृश्य अथवा अंशक निकटपाठ प्रत्येक अध्ययनक केन्द्र बनाओल जाय। तहिसँ विश्लेषणक साहित्यिक घनत्व बढ़त।

तेसर, स्रोत-विवरणमे ‘मूल पाठक कथन’, ‘लोकस्मृति’, ‘सत्यापित अभिलेख’, ‘स्वतंत्र शोध’ आ ‘समीक्षकक अनुमान’क संकेत पद्धति जोड़ल जाय। चौठ, ‘अरेड़’क तथ्यगत अन्तरक जाँच लेल खुलल परिशिष्ट रखल जाय जाहिमे मूल पृष्ठ, विरोधी पृष्ठ, जाँचबाक दस्तावेज आ अन्तिम स्थिति अलग लिखल हो। पाँचम, स्थान-नाम आ पात्र-नामक अनुक्रमणिका बनाओल जाय, जाहिसँ शोधकर्ता अलग खण्डक बीच आवागमन कऽ सकथि।

छठम, स्त्रीक मौखिक कथन अथवा लोकगीत उद्धृत करैत समय सहमति, क्षेत्र, प्रदर्शन-प्रसंग आ भाषिक मध्यस्थक विवरण स्पष्ट राखल जाय। सातम, सामाजिक तर्कक जाँच साहित्यिक शिल्पक प्रश्नसँ जोड़ल जाय: वाचक, कथाकाल, वस्तु-बिम्ब, संवाद, दृश्य-विन्यास आ अन्तक संरचना। आठम, डिजिटल संस्करणमे यथासम्भव स्थायी लिंक, मूल दस्तावेजक पहचान आ संस्करण-इतिहास राखल जाय। एहि संपादकीय क्रमसँ पुस्तकक मूल्य आओर दीर्घजीवी होयत।

२८. आलोचनात्मक निर्णय : महत्त्व, अपूर्णता आ सम्भावना

‘नित नवल कैलाश कुमार मिश्र’क स्थायी मूल्य इएह अछि जे ई पाँच विविध कृतिक बीच एक प्रश्नशील पठन-संबंध निर्मित करैत अछि। लेखकक सामाजिक संवेदना साहित्यिक पाठसँ अलग नहि; ओ पाठकँ गामक श्रम, स्त्रीक अनुभव, जातिक संस्था, यात्रा-दृष्टि आ प्रमाणक आवश्यकता दिस घुरबैत छथि। ई कार्य मैथिलीमे आलोचनात्मक गद्यक एक आवश्यक सार्वजनिक अभ्यास बनबैत अछि।

एहि महत्त्वक संग पुस्तकक अपूर्णता स्वीकार करब भी जरूरी अछि। व्यापक संकलनक प्रसंगमे प्रत्यक्ष मूल उद्धरणक तुलनात्मक निकटपाठ, स्रोतक समान रूपसँ सूचीकृत विवरण आ आख्यानशास्त्रीय पदावलीक व्यवस्थित उपयोग शेष अछि। मूल कृतिक सामाजिक मूल्याङ्कन प्रायः सघन होइत अछि, पर साहित्यिक रूपक आंतरिक तकनीक पर कई ठाम

अधिक सूक्ष्म परीक्षण सम्भव अछि। ई सीमा नकारात्मक अन्तिम फैसला नहि, भविष्यक पुनर्लेखनक कार्यदिशा अछि।

आशीष अनचिन्हारक एहि सम्पादकीय समीक्षाक निर्णयमे पुस्तक प्रशंसा आ संशयक बीच एक उपयोगी सेतु अछि। एकरा ना पाँच कृतिक अन्तिम न्यायपत्र मानल जाय, ना केवल परिचय-संग्रह। ई 'पढ़ल कृति पर पुनः प्रश्न'क अभ्यास अछि। जँ भविष्यक पाठक एहि पुस्तकसँ प्रेरित भऽ मूल कृतिसभ पढ़थि, भिन्न आवाज खोजथि, स्रोतक प्रत्यक्ष जाँच करथि आ साहित्यक भाषा पर आओर सूक्ष्म विमर्श करथि, तँ एहि समग्रक प्रयोजन सार्थक होयत।

षष्ठ विभाग : पाँच कृतिक सार-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न

२९. अध्ययन-पत्र : 'अरेड़ : गामक लोक इतिहास'

मूल कृतिक स्वरूप ग्राम-स्मृति, जीवनी, लोकगाथा आ संस्थागत इतिहासक मिश्रण अछि। समीक्षाधीन संग्रहक पहिल अध्ययनक पृष्ठ १३–३६मे सत्रह अध्यायक क्रमिक विवेचना, व्यक्तिचरित, भाव-भूगोल, घरेलू श्रम, स्रोतभेद आ आन्तरिक असंगतिक विश्लेषण अछि। हमर आलोचनात्मक निष्कर्ष: एहि अध्ययनक बल आत्मीय कथा आ कठोर प्रमाण-प्रश्नक संयुक्त उपस्थितिमे अछि; सीमा क्षेत्र-अभिलेखक अपूर्ण स्वतंत्र जाँचमे अछि।

अनुशीलन-प्रश्न: गामक स्मृति कहनिहार के छथि? महिला, भूमिहीन आ असंगठित श्रमिकक स्वकीय आवाज कतेक अछि? स्थाननामक विकल्पक स्रोत की? कथित घटना, लोकवीरगाथा आ उपलब्ध दस्तावेजक प्रमाण-स्तर अलग चिन्हित भेल अछि की? पुस्तकालय, विद्यालय, पोखरि आ मंदिरक इतिहासक नामित दस्तावेज कहाँ अछि? एहि प्रश्नसभक उत्तर भविष्यक लोकइतिहासकेँ बेसी विश्वसनीय बनाओत।

३०. अध्ययन-पत्र : 'बुकमेनिया'

'बुकमेनिया' मैथिली समीक्षा-संग्रह अछि, जकर बारह मुख्य रचनाक गजेन्द्र ठाकुर द्वारा पृष्ठ ३७–५९मे समीक्षात्मक अध्ययन कएल गेल अछि। कविता, उपन्यास, स्त्री-विमर्श, पञ्जी, प्रवास आ साहित्यिक सार्वजनिकता एहि खण्डक विषय छथि। हमर निष्कर्ष: ग्रन्थपठनक सामाजिक प्रज्ञा स्पष्ट अछि, मुदा कथासार आ शिल्पीय विवेचनक अनुपात आओर सम्यक् भऽ सकैत अछि; प्रशंसात्मक प्रतिक्रियाकेँ स्वतंत्र प्रमाण मानल नहि जाय।

अनुशीलन-प्रश्न: कोन कविता-पंक्तिक ध्वनि आ बिम्ब पर सूक्ष्म पाठ भेल? उपन्यासक कथावाचक आ समयक निर्माण पर कतेक विचार अछि? ऐतिहासिक आरोपक प्राथमिक स्रोत के? मूल समीक्षा आ पाठकीय टिप्पणीक

बीच संपादकीय भेद राखल गेल अछि की? एहि प्रश्नक उत्तर पुस्तकप्रेमकेँ प्रमाणपरक आलोचनामे बदलबाक मार्ग होयत।

३१. अध्ययन-पत्र : 'मनसरबी'

तेसर अध्ययन पृष्ठ ६०–७९मे पन्द्रह भागक सामाजिक उपन्यासक पुनर्पाठ अछि। बुलकी, राघब, नन्द, नैना, सौदामिनी, महानन्द आ अन्य पात्रमार्फत भूमि, सूद, जाति, प्रेम आ स्त्रीक निर्णयाधिकार पर चर्चा अछि। समीक्षाक केन्द्रीय कलात्मक उपलब्धि अन्तक कर्मफल-विचारक असफलताकेँ प्रश्नक रूपमे बचाओल राखब अछि। पाजेबक पुरिया वस्तु-बिम्बक सशक्त दृष्टान्त बनैत अछि।

अनुशीलन-प्रश्न: बुलकीक अपन शब्द आ वाचकक अर्थनिर्णयमे अन्तर कोना चिन्हित होइत अछि? प्रतिशोधक सामूहिक स्वरूप कथानकमे कोना बनैत अछि? समाजक कर्मफल-विश्वासकेँ अन्त कोना अस्थिर करैत अछि? पात्रक भीतर परिवर्तनक दृश्य-संरचना पर अधिक विवेचन सम्भव अछि की? ई प्रश्न पाठकेँ पुनः मूल उपन्यास दिस पठबैत अछि।

३२. अध्ययन-पत्र : 'विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना'

चारिम अध्ययन पृष्ठ ८०–९७मे चित्रकला, यात्रा, जनजातीय समाज, सांस्कृतिक भूगोल, ग्रामीण कथा-समीक्षा आ आलोचनात्मक पद्धतिक विविध प्रसंग जोड़ैत अछि। लेखकक उपलब्धि अनेक स्थलमे 'लोकक प्रश्न' खोजब अछि। सीमा प्रत्यक्ष प्रेक्षण, सुनल कथन आ स्वतंत्र शोधक साक्ष्य-श्रृंखला स्पष्ट न भेला सँ पैदा होइत अछि।

अनुशीलन-प्रश्न: 'समानान्तर साक्षरता'क रूपमे मिथिला चित्रकलाक अध्ययन लेल कोन ठोस उदाहरण आ शिल्पी-वाणी चाही? यात्रिकक भाषा आ स्थानीय कथकक आवाज कखन अलग पड़ैत अछि? सांस्कृतिक सम्मानसँ आर्थिक स्वायत्तता सिद्ध होइत अछि की? कथा-समीक्षामे सामाजिक सन्देश आ शिल्पीय जटिलताक समुचित भेद राखल गेल अछि की? ई खण्ड एक विस्तृत तुलनात्मक शोध-दिशा सुझबैत अछि।

३३. अध्ययन-पत्र : 'विदेह सदेह २९'

पाँचम अध्ययन पृष्ठ ९८–११५ मे विविध गद्य-पद्य आ लोक-अनुसन्धानपरक सामग्रीक आलोचनात्मक परीक्षण अछि। कथा, फकड़ा, सीता, मधुश्रावणी, जोगगीत, लोकभोजन, यात्रा, बलिप्रदान, तमाकू आ स्रोत-श्रेय सभ एहि अध्ययनमे आबैत अछि। हमर निष्कर्ष: लेखकक लोकक प्रति अनुराग केवल आदर्शवादी नहि; परम्पराक भीतर हिंसा आ स्त्री-असमानताक प्रश्न सेहो उपस्थित अछि। मुदा विधागत भिन्नताक कारण सभ लेखपर समान प्रमाण-पद्धति लागू करब सावधानी माँगैत अछि।

अनुशीलन-प्रश्न: गीतक मूल प्रस्तोता आ प्रसंग कोन? लोकमान्यता आ पुरातात्त्विक दावा अलग राखल गेल अछि की? कथनक साहित्यिक रूप पर कतेक सूक्ष्म विश्लेषण अछि? प्रसिद्ध कविक नामसँ प्रचलित पंक्तिक मूल श्रेयक जाँचक क्या प्रक्रिया अपनाओल गेल? एहि प्रश्नसँ लोकभाषाक साहित्यिक ऊर्जा आ शोधक कठोरता दुनू सुरक्षित रहत।

३४. अन्तिम सम्पादकीय निवेदन

समीक्षा ग्रन्थक अन्तिम शब्द नहि; ओ पुनः पठनक व्यवस्था अछि। 'नित नवल कैलाश कुमार मिश्र'क समीक्षा करैत ई खण्ड एही सिद्धान्तकेँ अपनौलक अछि जे प्रत्येक प्रशंसा अपने साक्ष्य माँगैत अछि, प्रत्येक आपत्ति अपने सीमा चाहैत अछि, आ प्रत्येक साहित्यिक निष्कर्ष पाठक फेर कृतिपर घुरबाक अवसर दैत अछि। पाँचो अध्ययनक मूल सामाजिक चिन्ता—स्मृति, मानवीय गरिमा, स्त्रीक अधिकार, न्याय आ ज्ञानक सार्वजनिकता—आगाँक कार्यक एजेण्डा बनि सकैत अछि।

ठाकुरक आलोचनात्मक श्रमक महत्त्व एहि बातमे सेहो अछि जे भाषा मैथिली अछि। सांस्कृतिक मानवशास्त्र, स्रोतविज्ञान, आख्यानशास्त्र आ साहित्यिक सौन्दर्य जखन मातृभाषामे चर्चा करैत अछि तखन शोधक प्रश्न विश्वविद्यालयक परिधिसँ बाहर पाठकक अनुभवमे उतरैत अछि। मुदा भाषा केवल माध्यम नहि; ओकर प्रमाण, शिल्प आ सम्पादकीय विश्वसनीयता सेहो

अर्जित करबाक पड़ैत अछि। एहि दोहरी जिम्मेवारीकेँ हम एहि खण्डक अन्तिम मानक मानैत छी।

ई समग्र समीक्षा लेखकीय परियोजनाक समर्थक भऽ आलोचनात्मक असहमतिक अधिकार सुरक्षित रखैत अछि। ओकर आशय कोनो कथकक स्मृतिसँ अधिकार छीनब नहि, वरु ओकर आवाज अधिक स्पष्ट रूपसँ सुरक्षित करब अछि; कोनो रचनाक मान घटाएब नहि, वरु हुनकर बनावटपर अधिक निर्दिष्ट विचार करब अछि। स्रोत, सौन्दर्य आ समाजक बीच ई संयमित संवादेँ गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ८२क बुनियादी निर्णय अछि।

पाठाधार आ सन्दर्भ

१. गजेन्द्र ठाकुर, नित नवल कैलाश कुमार मिश्र : पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन, विदेह, २०२७; उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त सम्पादित DOCX (मूल पाठाधार)।

२. तत्रैव, “अरेड़ : गामक लोक इतिहास”, मूल अध्ययन पृष्ठ १३–३६।

३. तत्रैव, “‘बुकमेनिया’ : पाठ, समाज आ समालोचनात्मक विवेक”, पृष्ठ ३७–५९।

४. तत्रैव, “मनसरबी”, पृष्ठ ६०–७९।

५. तत्रैव, “विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना : लोकसृजन, यायावरी आ साहित्यिक विवेक”, पृष्ठ ८०–९७।

६. तत्रैव, “लोकक जीवन, स्त्रीक स्वर आ प्रमाणक कसौटी” (‘विदेह सदेह २९’क अध्ययन), पृष्ठ ९८–११५।

ई समीक्षा मूल पाँच कृतिक प्रत्यक्ष स्वतंत्र पुनर्मुद्रण अथवा बाहरी अभिलेखीय सत्यापनक दावा नहि करैत।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८२

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल कैलाश कुमार मिश्र’क पाँच अध्ययनक विस्तृत सम्पादकीय आलोचना प्रस्तुत अछि। अरेड़क लोकइतिहास, ‘बुकमेनिया’क साहित्यिक विवेक, ‘मनसरबी’क स्त्री-जीवन आ न्याय-प्रश्न, यात्रा-निबन्ध आ ‘विदेह सदेह २९’क लोकसृजनक पुनर्पाठ कएल गेल अछि।

स्मृति आ इतिहासक प्रमाणभेद, जाति-वर्गक सम्बन्ध, स्त्रीक स्वतन्त्र स्वर, आख्यानकर्ता, भाषा, लोकगीतक प्रदर्शन-प्रसंग आ स्रोत-श्रेय पर विशेष विचार अछि। कृतिक उपलब्धि आ सीमा दुनू चिन्हित कऽ संशोधित संस्करण लेल सम्पादकीय सुझाव देल गेल अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय निर्णय

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur